न्यूज़ पेपर्स एसोसिएशन ऑफ इण्डिया

NEWSPAPERS ASSOCIATION OF INDIA

Volume XVII वर्ष 17 | No. 10 अंक: 10 | September-2012 सितम्बर-2012 | Rs. 5/- per copy

इतना सन्नाटा क्यूँ है भाई...ए के हंगल

❑ अब्दुल हई

अगले साल भारतीय सिनेमा के 100 वर्ष पूरे होने जा रहे हैं लेकिन हिन्दी सिनेमा को नई ऊंचाईयों तक ले जाने वाले और बीते 100 वर्षों में बॉलीवुड को पूरी दुनिया में परचलित करने वाले एक के बाद एक अच्छे कलाकार हमें छोड कर चले जा रहे हैं, मुझे यह समझ नहीं आ रहा कि आखिर हिन्दी सिनेमा के 100 वर्ष पूरे होने पर हम कैसा जश्न मनाएंगे और यह कैसी खुशी होगी, एक ओर हमें यह एहसास है की हिन्दी सिनेमा ने 100 वर्षों का लंबा और कामयाब सफर पूरा किया है और दूसरी ओर भारतिय फिल्मों के सर्वश्रेस्ठ कलाकारों के बिछड़ जाने का गम है।

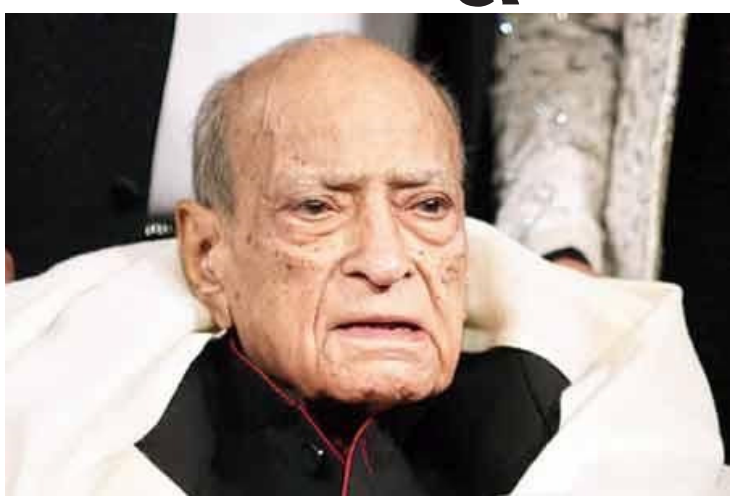

ए के हंगल साहब की मृत्यु(26 अगस्त 2012) के बाद एक अजीब बात यह भी सामने आई है की क्या कैमरे के सामने अदाकारी करने वाले यह बड़े बड़े अदाकार अपने वास्तविक जीवन में भी एक कलाकार बन कर रह गए हैं, ललिता पवार, प्रवीण बाबी, राजेश खन्ना या हंगल साहब सभी को बड़े कलाकारों ने उनके आखरी समय मे अकेला छोड़ दिया था, ए के हंगल साहब के मरने पर तो कोई भी बड़ा कलाकार सामने नहीं आया। यह बहुत अफसोस की बात है की एक ऐसा कलाकार जिसने अपने जीवन के अनमोल 50 वर्ष हिन्दी सिनेमा को दिये लेकिन जब उसकी मौत होती है तो उसकी आखिरी विदाई में शामिल होने वालों में हिन्दी फिल्म जगत की कोई बड़ी हस्ती मौजूद नहीं थी। उनकी शव यात्रा में शामिल वरिष्ठ अभिनेता रजा मुराद का कहना था कि, लंबा फैला हुआ उनका कैरियर रहा है, वो नेचुरल स्कूल ऑफ एक्टिंग से ताल्लुक रखते थे यह बड़ी अफसोसनाक बात है बल्कि यह शर्मनाक बात है कि ऐसा इंडस्ट्री का कोई बड़ा कलाकार नहीं है जिसके साथ हंगल साहब ने काम न किया हो लेकिन आज उनकी शव यात्रा में यहाँ कोई बड़ा चेहरा नहीं दिखाई दे रहा है, जिस इंसान ने इंडस्ट्री को 50 साल दिए उसे सलाम करने के लिए आपके पास 50 मिनट नहीं। इस दौर तरक्की में क्या किस से मिले कोई , जब खुद से भी मिलने का एक वक्त मुकर्रर है, जब उनकी अपने आप से मुलाकात नहीं हो पाती ,तो वो हंगल साहब को क्या वक्त दे पाएँगे"।

ए के हंगल (अवतार कृष्ण हंगल)का जन्म 1 फरवरी 1917 को सियालकोट,पंजाब पाकिस्तान में हुआ था, उनका बचपन पेशावर में गुजरा, उनके पिता एक दर्जी थे और कुछ दिन तक हंगल साहब ने भी इस पेशे में काम किया था , शुरू से ही एक्टिंग से लगाव था इसलिये उन्होंने ।

शेष पृष्ठ 2 पर...

जीडीए उपाध्यक्ष द्वारा आरटीआई कार्यकर्ता को शिकायत पर बनाया बंदी

❑ संवाददाता

गाजियाबाद 1 सितंबर। हाल ही में हुई एक घटना में बड़ा मुद्दा सामनें आया है गाजियाबाद विकास प्राधिकरण अब शिकायतकर्ताओं को बंधक बनाने लगा है।

❑ मुख्यमंत्री कार्यालय में तुरंत भेजी सूचना उसके बाद रिहा किया गया।

❑ जीडीए अधिकारियों द्वारा उत्पीड़न मामले में राजीव शर्मा ने राष्ट्रीय मानव अधिका र आयोग, राष्ट्रपति महोदय, मुख्यमंत्री उत्तरप्रदेश, मुख्य न्यायधीश, सर्वोच्च न्यायालय को दी सूचना व मामले की जांच कराने की मांग कीं ।

अगर आप किसी पड़ासी के अवैध निर्माण या अन्य किसी शिकायत करने जीडीए आफिस जा रहे है तो थोड़ा सोच समझकर जाये क्योंकि आज कल जीडीए अधिकारी शिकायत कर्ताओं को बंधक बना रहे है और जिसकी शिकायत आप करने जा रहे है उनसे सांठ गांठ कर रहे है। ट्रांस हिंडन पार क्षेत्र की शिकायत करने राजीव शर्मा नाम का शख्स जो भारतीय मानवाधिकार संरक्षण संघ के राष्ट्रीय महासचिव है। इनके द्वारा 27 अगस्त 2012 को पत्रांक संख्या बीएएम.एसएस–295/12 के द्वारा जीडीए उपाध्यक्ष को अवगत कराया गया था कि 15.05.2012 को जीडीए द्वारा विक्रम एंक्लेव संस्थान पर सील की कार्यवाही की गयी थी। परंतु शिक्षण संस्थान प्रबंधक द्वारा जीडीए द्वारा लगाई गई सील को तोड़ दिया गया है। इस शिकायत को लेकर प्रार्थी व्यक्तिगत भी उपाध्यक्ष ने जानकारी के बभाव बताकर कुछ समय बाद इस संबंध में जानकारी उपलब्ध कराये जाने का आश्वासन दिया गया।

जिस पर प्रार्थी द्वारा उपाध्यक्ष के समझ प्रस्तुत होकर दी गई शिकायत पर क्या कार्यवाही हुई की जानकारी मांगी गई इस संबंध में राजीव शर्मा ने बताया कि वीसी ने जानकारी उपलब्ध कराये जाने की वजह जीडीए पुलिस को बुलाकर बंधक बना लिया गया।

साथ ही भारतीय मानव अधिकार संरक्षण संघ के राष्ट्रीय महासचिव को शिक्षण संस्थान के विरूद्ध कार्यवाही न किय जाने की हिदायत भी दी ।

इस शिकायत से एक दिन पहले जीडीए के अधिकारी भुपसिंह नें राजीव शर्मा को पफोन पे ध्मकी भी दी जिससे उन्होंने ये भी बोल स्कूल मालिक से रोज बात होती है और इस मुद्दे पर ज्यादा शिकायत करी तो जेल भिजवा दूंगा।

जब राजेश शर्मा स्कूल को सील के मुद्दे और जीडीए अधिकारी भुपसिंह द्वारा दी गई धमकी की शिकायत करने पहुंचे तो जीडीए उपाध्यक्ष नें तुरंत जीडीए पुलिस को बुलाकर उनके हवाले कर दिया और लगभग 6 घंटे पुलिस हिरासत मे रखा।

सूचना मिलते ही कई पत्राकार व समाजसेवी जीडीए कार्यालय पहुंचे तो जीडीए उपाध्यक्ष संतोष यादव चुपचाप कार्यालय से निकलकर चले गये। बहरहाल आप सभी गाजियाबाद विकास प्राधिकरण के अधिकारियों से शिकायत करने जा रहे है तो जरा संभलकर कहीं ऐसा ना हो की जीडीए अधिकारी आपके ऊपर किसी प्रकार का आरोप लगाकर हिरासत में ना डाल दे।

एन.ए.आई द्वारा देहदानियों का सम्मान एक नई पहल

❑ अमन वर्मा

न्यूज पेपर एसोसिएशन ऑफ इण्डिया जयपुर। न्यूज पेपर एसोसिएशन ऑफ इण्डिया की

राजस्थान इकाई द्वारा आयोजित देहदानियों के पहले सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित करते हुए चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री ए.ए.खान (दुर्रुमियां) ने कहा है कि देहदान करने की विशेष अहमियत है। जिससे की समाज मे कई तरह की समस्यों का समाधान हो सकता है किडनी व लीवर जैसे अंगो का निर्धारित समयावधि में देहदान के जरिये किसी अनमोल जीवन को बचाया जा सकता है। इसके साथ ही चिकित्सा छात्रों के अध्ययन में देह का विशेष महत्व है। खान ने कहा कि रक्तदान, नेत्रदान व देहदान को प्रोत्साहित करने में स्वयंसेवी संस्थाओं का विशेष योगदान है। और न्यूज पेपर एसोसिएशन ऑफ इण्डिया जयपुर ने बहुत अच्छी पहल की देहदान करने वालो के लिए देश के पहले सम्मान समारोह का आयोजन किया समारोह में चिकित्सा मंत्री ने देहदान की घोषणा करने वाले 85 वर्षीय रामकृष्ण शर्मा, 86 वर्षीय विमल चौधरी एवं मुकुट सिंह काजला का साफा पहनाकर एवं प्रमाण–पत्र प्रदान कर सम्मान किया गया। चिकित्सा मंत्री ने कहा कि प्रदेश में देहदान का निःशुल्क प्रपत्र संबंधित मेडिकल कॉलेज से प्राप्त किया जा सकता है। इसके लिए मेडिकल कॉलेज के एनाटोमी

शेष पृष्ठ 8 पर...

DEPRESSION

❑ *Kalpana Karala*
[D.Y.N, N.D.D.Y, M.A (SOL, PRIKSHA MEDITATION YOG), PRANIC HEALER]

Depression, is the most prevalent of all the emotional disorders. This may vary from feelings of slight sadness to utter misery. Together a variety of physical and psychological symptoms constitute this as syndrome.

Depression is the most unpleasant experience a person in his life. It is for more difficult to cope with than a physical ailment. Growing complexities of modern life, resultant crisis, mental stress, strain in day to day life usually lead to this disorder. CUICIDE is the major risk of depression.

It is very difficult to diagnose depression clinically. Put the basic symptoms of depression are feelings of acute sense of loss, sadness, loss of interest, loneliness, loss of energy, frequent headaches, pains in body etc. Usually, patient suffering from depression lacks interest in the world around him sleep disturbance is most common. Patient wakes up at 3-4 or 5 in the morning with depressed and then he is unable to return to sleep. Lost interest in eating and suffer from rapid loss of weight while others may resort to frequent eating and as a result some may gain weight.

In severe depression it is character by low body temperature, L.B.P., shivering etc.

Dis-functioning of the adrenal glands is one of the main causes of mental depression. Usually irregular diets habits comes with depression and this will finally leads to digestive problems and leads to the assimilation of fats. Excess use of carbs likes coffee, tea, cereals, white sugar, maida, chocolates, fast food etc. and less us of vegetables and fruits in foot habits ultimately leads of indigestion. Because of digestive disorders, the gases which are produced in digestive tract, causing compression over the diaphragm in the region of the heart and lungs. Resulting, in turn reduces the supply of oxygen to the tissues which causes increase in the level of carbon dioxide, and causing general disease which is known as Depression.

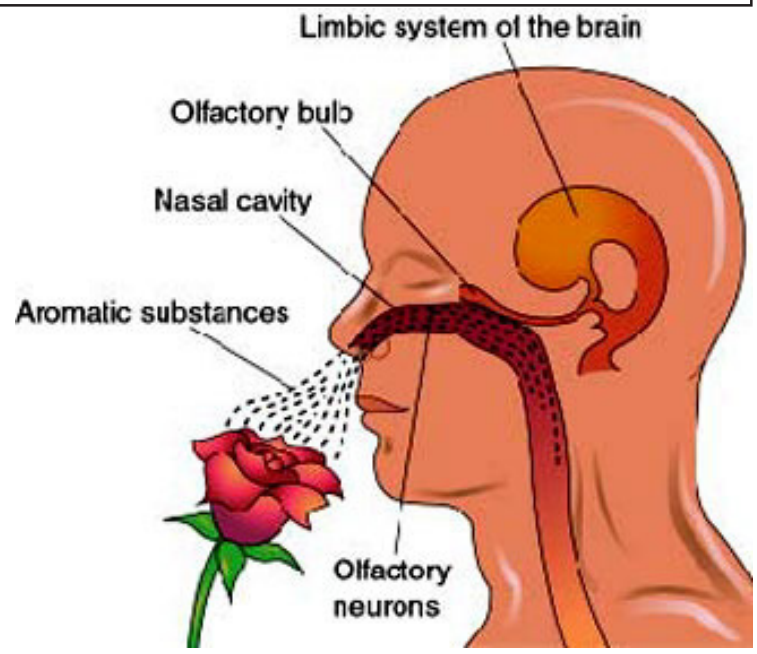

Excessive use of drugs also leads to assimilation of vitamins and minerals in the body also leads to depression. Use of aspirin, deficiencies of Vitamin C, deficiencies of calcium and Vitamin B diabetes, low blood sugar and weakness of the liver resulting from the use of refined food, fried food items, intake of fats may also lead to Depression.

Care: Anti depression medicines were mostly used for the treatment, in depression… but they may leads to the harmful side-effects. Which causes hyper-sensitivity, liver damage, insomnia, hallucinations, low blood pressure, confused state of mind, headaches, difficulty in inhaling and urine retention.

Self-treatment of depression consists of regulation of diet, exercise, Preksha Meditation and relaxation.

Foods rich in Vitamin B, like whole grains, green vegetables etc helps a lot.

Diet should be restricted to the meals. Fruits in the morning with milk along with nuts. Lunch of steamed vegetables, whole wheat chappatis, butter milk. In dinner green vegetables salad, or sproutes of alfalfa seeds, mung, cottage cheese would be ideal.

Yogic Exercise: Physical exercise overcome depression mood. "Exercise produces chemical and psychological changes that improves mental health." It changes the levels of harmones in blood and may elevate your beta-endorphins (mood-effecting chemicals). Exercises also improve the functions of autonomic nervous system.

Asana: Surya namaskara, dynamic asanas, all backward bending, standing and twisting asanas. Such as bhiyangasan, shalabhasana, halasana aschimottanasana, sarvangasana.

Pranayam: Bhastrika, Kapalbhati, anuloma-veloma, anuloma-viloma, abdominal breathing.

Shatkarma- Kunjal, neti, laghoo-shankhprakshalana.

Diet- Nutritious vegetarian simple diet.

Meditation involves training the mind to remain fixed on certain sutiations. Meditation helps in balancing of the nervous system. This would enable the glands to return to a correct state of return to a correct state of hormonal balance and thus helps in releasing Depression.

शेष भाग पृष्ठ 1 से

इतना सन्नाटा क्यूँ है.....

जॉइन किया और भारत कि आजादी और उसके बाद के कई वर्षों तक रंगमंच से जुड़े रहे। कैफी आजमी, बलराज साहनी और उत्पल दत्त के साथ साम्यवादी विचार धारा को आम किया। उन्हों ने देश कि आजादी की लड़ाई में जी जान से भाग लिया। कराची में तीन वर्षों तक जेल में रहे और रिहाई मिलने के बाद 1950 में भारत आकर मुंबई में बस गए और यहाँ के विभिन्न नाटकों में भाग लेते रहे।

1966–67 में हंगल साहब ने फिल्म तीसरी कसम से हिन्दी सिनेमा में कदम रखा। यह बात भी यहाँ बताना आवश्यक है कि जिस समय हंगल साहब ने कैमरे का सामना किया, उनकी उम्र 50 वर्ष थी, और इसीलिये हंगल साहब के बारे मे कहा जाता है कि हंगल साहब हिन्दी फिल्मों का ऐसा बुजुर्ग है जो कभी जवान नहीं रहा। स्काटिश उपन्यासकार एवं नाटककार जे.एम. बैरी के द्वारा रचा गया पत्र पीटर पैन एक ऐसा किरदार है जो कभी बूढ़ा नहीं हुआ क्यूंकी एक जादू के द्वारा उसे सदा एक बच्चा बने रहने का वरदान प्राप्त हुआ है, ठीक उसी तरह हिन्दी फिल्मों में हंगल साहब एक ऐसे बुजुर्ग रहे हैं जो हमेशा बूढ़े रहे, फिल्मों में जिस समय आए तो वृद्ध थे। उनकी उम्र ऐसी थी कि उन्हें अभिनेता का रोल तो मिल नहीं सकता था इसलिये उन्हें हीरो के बाप, चाचा, मामा, या बड़ी उम्र के किसी रोल को निभाने का अवसर मिला।

फिल्म शोले में रहीम चाचा का किरदार आज भी अमर है, उनका संवाद इतना सन्नाटा क्यूँ है भाई आज भी लोगों कि जबान पर है, गरम हवा में आजमानी साहब का किरदार, बावर्ची का राम नाथ शर्मा, कोरा कागज के प्रिंसिपल गुप्ता, अभिमान के सदानंद और सब से बढ़कर शौकीन में उत्पल दत्त, अशोक कुमार और ए के हंगल अभिनीत बेहतरीन कॉमेडी भरी फिल्म के बुजुर्गों को कौन भुला सकता है जो अपने ड्राइवर की माशूका को प्रभावित करने कि कोशिश करते हैं। उनकी यादगार फिल्मों में अवतार, आईना, अर्जुन, आँधी, कोरा कागज, चित चोर, नमक हराम, अनामिका, गुड्डी, परिचय आदि शामिल हैं। यह भी एक संयोग ही है कि हंगल साहब ने अपने जीवन में सब से अधिक फिल्में सुपर स्टार राजेश खन्ना के साथ की हैं और राजेश खन्ना के दुनिया छोड़ने के 36 दिन बाद हंगल साहब भी उनके हम सफर हो गए। हिन्दी सिनेमा और पूरी दुनिया इन दो महान कलाकारों को उनकी फिल्में आपकी कसम, फिर वही रात, कुदरत, नौकरी आदि के लिए सदा याद करेगी। हंगल साहब ने आमिर खान के साथ फिल्म लगान में वृद्ध गाँव वाले का रोल किया था और गीत घनन घनन में अमीर खान के साथ झूमते हुए नजर आए थे।

शाहरुख खान के साथ पहेली में भी वो दिखाई दिये। उन्हों ने जीवन रेखा, चन्द्रकान्ता तथा मधुबाला जैसे टीवी सेरियलों में भी काम किया था मधुबाला तो अभी कुछ महीनों पहले ही स्टार्ट हुआ था और इस सिरियल के लिए जब वो सेट पर आए तो बहुत खुश थे और कैमरे के सामने आकर तो वो ऐसे खुश हो रहे थे जैसे किसी बच्चे को उसका पसंदीदा खिलौना मिल गया हो, पूरी रात वो सेट पर हँसते खिलखिलाते रहे और बहुत ही खुशी खुशी अपना सीन शूट करवाया। पिछले वर्ष उनकी हालत बहुत खराब हो गई थी और आमिर खान ने इलाज के लिए जनता के सामने उनकी मदद करने का अनुरोध किया, जया बच्चन, सलमान खान और दूसरे लोग भी हंगल साहब के इलाज के लिए आगे आए। उन्होने अपना पूरा जीवन साम्यवादी विचार धारा के साथ ही बिताया तथा इतनी बड़ी उम्र में भी उन्हें देश दुनिया में समाजवाद, समाज के निचले तबके कि स्वतंत्रता तथा उनके अधिकारों का एहसास रहता था। जालियानवाला बाग हत्याकांड के बाद जब पूरे देश में अंग्रेज सरकार के खिलाफ गुस्सा उबाल रहा था हंगल ने बहुत कम उम्र में ही भारत कि आजादी के लिए सभाओं में भाग लेना शुरू कर दिया था और नाटकों में भी आजादी के समर्थन में कई महत्वपूर्ण रोल निभाए। उन्हें भारत सरकार ने 2006 में पदम भूषण से सम्मानित किया था। हिन्दी फिल्मों का यह सदाबहार बुजुर्ग अदाकार हमेशा हमारे दिल में जीवित रहेगा और उनके जाने पर उनकी ही कही पंक्ति बहुत उचित लगती है, "इतना सन्नाटा क्यूँ है भाई.......

Example of Women Power

Mangte Chungneijang Mary Kom, (born 1 March 1983), also known as MC Mary Kom,Magnificent Mary or simply Mary Kom, is an Indian boxer belonging to Kom tribal community of north-eastern state of Manipur. She is a five-time World Boxing champion, and the only woman boxer to have won a medal in each one of the six world championships.She is the only Indian woman boxer to have qualified for the 2012 Summer Olympics, competing in the flyweight (51kg) category and winning the bronze medal. She has also been ranked as No. 4 AIBA World Women's Ranking Flyweight category. Mary was born in

Kangathei, in Churachanpur district of Manipur. Her parents, Mangte Tonpa Kom and Mangte Akham Kom, worked in jhum fields. She completed her primary education from Loktak Christian Model High School, Moirang, up to her class VI standard and attended St. Xavier Catholic School, Moirang, up to class VIII. She then moved to Adimjati High School, Imphal, for her schooling for class IX and X, but could not pass her exam. She did not want to reappear for her exams so she quit her school and gave her examination from NIOS, Imphal and graduation from Churachandpur College.Although she had a keen interest in athletics from childhood, it was the success of Dingko Singh that inspired her to become a boxer in 2000.She is married to K Onler Kom and has twin sons, Rechungvar and Khupneivar.

Kom initially tried to hide her interest in boxing from her family, since it was not considered a suitable sport for a woman. However, after her victory in the Manipur state women's boxing championship in 2000, her career became public; her father discovered his daughter's achievement through a photograph in a newspaper. After winning the regional championship in West Bengal, Kom began competing at the international level at the age of 18, only a year after she started boxing. Her international debut was at the first AIBA Women's World Boxing Championship in the United States, where she won a silver medal in the 48 kg weight category. She followed this with a gold medal in the 45 kg class at thesecond AIBA Women's World Boxing Championship in Turkey in 2002.In 2003, Kom won a gold medal in the 46 kg class - she would compete in this class for the next three years - at the Asian Women's Boxing Championship in India, and was awarded the national Arjuna Award for outstanding sporting achievement. In 2004, she won gold at the Women's Boxing World Cup in Norway, and in 2005 again won gold at theAsian Women's Boxing Championship in Taiwan and the AIBA Women's World Boxing Championship in Russia. The following year, she won gold at the Venus Women's Box Cup in Denmark and the AIBA Women's World Boxing Championship in India. Her victory in the World Championship was marred by illness; the final had to be suspended in the second round, with Kom leading 19-4

After a two-year break, she won a silver medal at the 2008 Asian Women's Boxing Championship in India and a fourth successive gold medal at the AIBA Women's World Boxing Championship in China, followed by a gold medal at the 2009 Asian Indoor Games in Vietnam.In 2010, Kom won the gold medal at the Asian Women's Boxing Championship in Kazakhstan, and at the AIBA Women's World Boxing Championship in Barbados, her fifth consecutive gold at the championship. She competed in Barbados in the 48 kg weight class, after AIBA had stopped using the 46 kg class. In the 2010 Asian Games, she competed in the 51 kg class - the lowest in the contest - and won a bronze medal. In 2011, she won gold in the 48 kg class at the Asian Women's Cup in China, and in 2012 took the gold medal in the 51 kg class at the Asian Women's Boxing Championship in Mongolia.On 3 October 2010, she, along with Vijender Singh, had the honour of bearing the Queen's Baton in its opening ceremony run in the stadium for the 2010 Commonwealth Games of Delhi. She did not compete, however, as women's boxing was not included in the Commonwealth Games

Awards and recognitions

- *Arjuna Award (Boxing), 2003*
- *Padma Shree (Sports), 2006*
- *Contender for Rajiv Gandhi Khel Ratna Award, 2007*
- *People of the Year- Limca Book of Records, 2007*
- *CNN-IBN & Reliance Industries' Real Heroes Award 14.4. 2008 Mon*
- *Pepsi MTV Youth Icon 2008*
- *'Magnificent Mary', AIBA 2008*
- *Felicitation by Zomi Students' Federation (ZSF) at New Lamka YPA Hall in 2008*
- *Rajiv Gandhi Khel Ratna award, 2009*
- *International Boxing Association's Ambassador for Women's Boxing 2009 (TSE 30.7.2009 Thur)*
- *Sportswoman of the year 2010, Sahara Sports Award*

Mary, a five-time world champion, had won several medals in the 46 and 48kg categories. She was forced to shift to this category and gain weight two years ago after the world body decided to allow women's boxing in only three weight categories-the lowest one being 51kg. At the 2012 AIBA Women's World Boxing Championship, Kom was competing not just for the championship itself but also for a place at the 2012 Summer Olympics in London, the first time women's boxing had featured as an Olympic sport. She was defeated in the 51 kg quarter-finals by Nicola Adams of the UK (to whom she would eventually lose in the semifinal of the London 2012 Olympic Games as well), making this the first year since the championship began that Kom did not win a medal, but did succeed in getting a place for the Olympics. She was the only Indian woman to qualify for boxing event, with Laishram Sarita Devi narrowly missing a place in the 60 kg class.Kom was accompanied to London by her mother[and husband. Kom's coach Charles Atkinson will not join her at the Olympic Village as he doesn't possess an International Boxing Association (AIBA) 3 Star Certification, which is mandatory for accreditation.

The first Olympic round was held on 5 August 2012, with Kom defeating Karolina Michalczuk of Poland 19-14 in the third women's boxing match ever to be fought at the Olympics. In the quarter-final, the following day, she defeated Maroua Rahali of Tunisia with a score of 15-6.She faced Nicola Adams of UK in the semi-final on 8 August 2012 and lost the bout 6 points to 11. However, she stood third in the competition and garnered her first olympic Bronze medal.[21][22][23] Manipur Government has decided to award Rs 50 lakh and two acre land to Kom in the cabinet meeeting held on 9 August 2012.

सम्पादकीय

खनिज सम्पदा के दोहन से प्रगति और कुगति

❑ विपिन गौड़

संसार में खनन उद्योग के विन्यास का परिदृश्य अनेक कारकों पर निर्भर करता है, जिनमें आकार की दृष्टि से तथा दोहन की तकनीकी–आर्थिक परिस्थितियों की दृष्टि से खनिज निक्षेपों का विस्तार सारी पृथ्वी पर और अलग–अलग देशों में भी खनिज भंडारों का विस्तार बहुत असमान है। कुछ समय पहले तक इस असमानता का एक बहुत बड़ा कारण यह माना जाता था कि अलग–अलग देशों और महाद्वीपों में भूगर्भीय सर्वेक्षण का स्तर अलग–अलग है।

हालांकि संसद में कोयले को लेकर हंगामा हुआ। कोल ब्लॉक आवंटन को लेकर हुए नुकसान को लेकर भाजपा, यूपीए सरकार पर तोहमत मढ़ रही है। ऐसे में प्रश्न यह भी उठता है कि भारत में खनिज सम्पदा की उपस्थिति और उसके उपभोग और उद्योग से अलग हटकर पर्यावरणीय दृष्टि से खनिज सम्पदाओं से प्राप्त होने वाले लाभ और हानि पर भी संसद में विचार करना वक्त की मांग है। आज जिस प्रकार राष्ट्रीय स्तर पर खनिज सम्पदाओं का दोहन हो रहा है उससे हमारा देश प्रगति का प्रदर्शन करता दिख रहा है लेकिन प्रकृति के निरन्तर पतन की जो पहल जारी है उसके प्रति भी नये सिरे से संसद में विचार करना चाहिए। कोयला उद्योग का महत्व बढ़ा है। पर्यावरण रक्षा के समर्थकों के विरोध तथा अन्य कई कारकों के बावजूद विशालतम तेल कम्पनियों के नवीनतम अनुमान यह दिखाते हैं कि पूंजीवादी जगत में कोयले की मांग ऊर्जा–उत्पादन के कुल परिणाम में वृद्धि होने से तेजी से बढ़ेगी। देशों में खनिज संसाधनों के विस्तार का विशिष्टतम लक्षण है उनका उच्च संकेंद्रण संसार के केवल पांच देशों–सोवियत संघ, संयुक्त राज्य अमरीका, कनाडा, आस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका गणराज्य– में यूरेनियम, प्लैटिनम, वैनेडियम, मॉलिब्डेनम, पोटैशियम, क्रोमियम, मैंगनीज, जिंक, चांदी, लोहे, सीसे, टाइटेनियम, फास्फ़ेटों, तांबे, ऐलुमिनियम और निकल के 25 प्रतिशत से अधिक संसाधन है, इनमें से 10 तत्वों के भंडार तो यहां संसार के कुल भंडारों के 75 प्रतिशत से अधिक है। सोवियत संघ, अमरीका और कनाडा में ही तांबे, फास्फेटों और यूरेनियम के आधे से अधिक संसाधन हैं। सबसे अच्छी स्थिति सोवियत संघ की है, जहां प्रायः सभी प्रकार के महत्वपूर्ण कच्चे माल के विश्व भंडारों का 5 प्रतिशत स्थित है। अतः इस देश के लिए इनकी प्राप्यता की समस्या नहीं उठती। संसाधनों की भावी स्थिति का पूर्वानुमान लगाते समय भंडारों में इस विषमता को ध्यान में रखना चाहिए, क्योंकि जिन देशों में भंडार अधिक हैं और उत्पादन कम, वहां कुछ उत्पादन में उनका अंश बढ़ने की उम्मीद की जा सकती हैं लेकिन भविष्य का परिदृश्य अन्य अनेक कारकों पर भी निर्भर होगा, जैसे कि विशाल निक्षेपों की खोजों की संभावना (हालांकि ऐसी खोजें विरली ही होंगी), सीमित संसाधनों वाले देशों द्वारा आत्मनिर्भरता की नीति को अपनाया जाना। इसके साथ ही आज जो स्रोत अलाभकर माने जाते हैं (महासागर, विपन्न, अर्थात अल्प सांद्रता वाले अयस्क, बड़ी गहराइयां), उनका दोहन आरंभ हो सकता है तथा धातुओं के दुबारा संसाधन का अंश बढ़ सकता है, जिससे वर्तमान स्थिति में आमूल परिवर्तन संभव है। बीसवीं सदी के मध्य में नये–नये प्रकार के संसाधनों की मांग बढ़ी, जबकि कोयले और लौह अयस्क का महत्व घटा, जो 19वीं सदी और 20वीं सदी के आरंभ में औद्योगीकरण की बुनियाद थे। पर्यावरण की रक्षा आवश्यकता को देखते हुए भी कई प्रकार की खनिक सामग्री का सर्वेक्षण और टोह कार्य तथा खनन घटाना पड़ा। अमरीका, इंगलैंड और पश्चिम जर्मनी में बहुत बड़े पैमाने पर तथा कनाडा और कुछ दूसरे देशों में कुछ कम हद तक कोयले के उपयोग पर पर्यावरण से संबंधित प्रतिबंध लगाये गये। उदाहरणतः अमरीका के 24 राज्यों में ऐसा कोयला जलाना मना है, जिसमें गंधक की मात्रा 0.8 प्रतिशत से अधिक हो। 21 राज्यों में 1.6 प्रतिशत से अधिक गंधक वाला कोयला जलाना मना है। इसके परिणामस्वरूप अमरीका में गंधकयुक्त कोयले का खनन बहुत कम हो गया है। इन सब बातों के कारण विकसित देशों में खनिक सामग्री के उत्पादन में वृद्धि की दर बहुत कम हो गयी और ये देश आयात पर बहुत निर्भर हो गये। फिलहाल तो विश्व में खनिज संसाधनों के भंडारों और उत्पादन के पैमाने की दृष्टि से प्रमुख भूमिका पांच देशों की है –सोवियत संघ, अमरीका, कनाडा, आस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका गणराज्य की। निकट भविष्य में भी यही स्थिति बनी रहेगी, यही नहीं, कनाडा, आस्ट्रेलिया तथा कुछ हद तक सोवियत संघ प्रत्यक्षतः उत्पादन में वृद्धि की दर बढ़ाना जारी रखेंगे। उत्पादन का बड़ा अंश अल्प सांद्रतावाले विशाल और विशालतम निक्षेपों के साथ जुड़ा होगा। चीन, ब्राजील, मैक्सिको तथा संभवतः कुछ अन्य देशों के उत्पादन का अंश बढ़ने की भी उम्मीद की जा सकती है।

हिन्दू होना अपराध है क्या ?

❑ दिलीप कुमार

प्रकृति कभी भी किसी से कोई भेदभाव नहीं करती और इसने सदैव ही इस धरा पर मानव–योनि में जन्मे सभी मानव को एक नजर से देखा है. हालाँकि मानव ने समय दृ समय पर अपनी सुविधानुसार दास–प्रथा, रंगभेद–नीति, सामंतवादी इत्यादि जैसी व्यवस्थाओं के आधार पर मानव–शोषण की ऐसी कालिमा पोती है जो इतिहास के पन्नो से शायद ही कभी धुले. समय बदला. लोगो ने ऐसी अत्याचारी व्यवस्थाओं के विरुद्ध आवाज उठाई. विश्व के मानस पटल पर सभी मुनष्यों को मानवता का अधिकार देने की बात उठी परिणामतः विश्व मानवाधिकार का गठन हुआ और वर्ष 1950 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रत्येक वर्ष की 10 दिसंबर को विश्व मानवाधिकार दिवस के रूप में मनाने का तय किया गया. मानवाधिकार के घोषणा–पत्र में साफ शब्दों में कहा गया कि मानवाधिकार हर व्यक्ति का जन्म सिद्ध अधिकार है ,जो प्रशासकों द्वारा

जनता को दिया गया कोई उपहार नहीं है तथा इसके मुख्य विषय शिक्षा ,स्वास्थ्य ,रोजगार, आवास, संस्कृति ,खाद्यान्न व मनोरंजन इत्यादि से जुडी मानव की बुनयादी मांगों से संबंधित होंगे।

1947 में भारत का भूगोल बदला. पाकिस्तान के प्रणेता मुहमद अली जिन्ना को पाकिस्तान में हिन्दुओं के रहने पर कोई आपत्ति नहीं थी ऐसा उन्होंने अपने भाषण में भी कहा था क्योंकि पाकिस्तानी– संविधान के अनुसार पाकिस्तान कोई मजहबी इस्लामी देश नहीं है तथा विचार अभिव्यक्ति से लेकर धार्मिक स्वतंत्रता को वहा के संविधान के मौलिक अधिकारों में शामिल किया गया है इसके साथ–साथ अभी हाल में ही इसी वर्ष मई के महीने में में राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी द्वारा मानवाधिकार कानून पर हस्ताक्षर करने से वहा एक राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग कार्यरत है. भारतीयों को भी भारत में मुस्लिमो के रहने पर कोई आपत्ति नहीं थी. समय के साथ साथ पाकिस्तान में हिन्दुओ की जनसँख्या का प्रतिशत का लगातार घटता गया और इसके विपरीत भारत में मुस्लिम–जनसँख्या का प्रतिशत लगातार बढ़ता गया. इसके कारण पर विवाद हो सकता है परन्तु इसका एक दूसरा कटु पक्ष है. पाकिस्तान में रह रहे हिन्दुओ ने हिन्दुस्तान में शरण लेने के लिए पलायन शुरू किया जिसने विभाजन के घावों को फिर से हरा कर दिया. पर कोई अपनी मातृभूमि व जन्मभूमि से पलायन क्यों करता है यह अपने आप में एक गंभीर चिंतन का विषय है. क्योंकि मनुष्य का घर–जमीन मात्र एक भूमि का टुकड़ा न होकर उसके भाव–बंधन से जुड़ा होता है. परन्तु पाकिस्तान में आये दिन हिन्दू पर जबरन धर्मांतरण, महिलाओ का अपहरण, उनका शोषण, इत्यादि जैसी घटनाए आम हो गयी है.

ध्यान देने योग्य है कि अभी कुछ दिन पहले ही पाकिस्तान हिंदू काउंसिल के अध्यक्ष जेठानंद डूंगर मल कोहिस्तानी के अनुसार पिछले कुछ महीनों में बलूचिस्तान और सिंध प्रांतों से 11 हिंदू व्यापारियों सिंध प्रांत के और जैकोबाबाद से एक नाबालिग लड़की मनीषा कुमारी के अपहरण से हिंदुओं में डर पैदा हो गया है. वहा के कुछ टीवी चौनलों के साथ दृ साथ पाकिस्तानी अखबार डॉन ने भी 11 अगस्त के अपने संपादकीय में लिखा कि 'हिंदू समुदाय के अंदर असुरक्षा की भावना बढ़ रही है' जिसके चलते जैकोबाबाद के कुछ हिंदू परिवारों न

धर्मांतरण, फिरौती और अपहरण के डर से भारत जाने का निर्णय किया है। पाकिस्तान हिन्दू काउंसिल के अनुसार वहां हर मास लगभग 20–25 लड़कियों का धर्म परिवर्तन कराकर शादियां कराई जा रही हैं. यह संकट तो पहले केवल बलूचिस्तान तक ही सीमित था, लेकिन अब इसने पूरे पाकिस्तान को अपनी चपेट में ले लिया है. रिम्पल कुमारी का मसला अभी ज्यादा पुराना नहीं है कि उसने साहस कर न्यायालय का दरवाजा तो खटखटाया, परन्तु वहा की उच्चतम न्यायालय भी उसकी मदद नहीं कर सका और अंततः उसने अपना हिन्दू धर्म बदल लिया. हिन्दू पंचायत के प्रमुख बाबू महेश लखानी ने दावा किया कि कई हिंदू परिवारों ने भारत जाकर बसने का फैसला किया है क्योंकि यहाँ की पुलिस अपराधियों द्वारा फिरौती और अपहरण के लिए निशाना बनाए जा रहे हिंदुओं की मदद नहीं करती है. इतना ही नहीं पाकिस्तान से भारत आने के लिए 300 हिंदू और सिखों के समूह को पाकिस्तान ने अटारी–वाघा बॉर्डर पर रोक कर सभी से वापस लौटने का लिखित वादा लिया गया. इसके बाद ही इनमें से 150 को भारत आने दिया गया. पाकिस्तान में रह रहे हिन्दुओ पर की जा रही बर्बरता को देखते हुए हम मान सकते है कि विश्व–मानवाधिकार पाकिस्तान में राह रहे हिन्दुओ के लिए नहीं है यह सौ प्रतिशत सच होता हुआ ऐसा प्रतीत होता है. समय पर विश्व मानवाधिकार ने इस गंभीर समस्या पर कोई संज्ञान नहीं लिया यह अपने आप में विश्व मानवाधिकार की कार्यप्रणाली और उसके उद्देश्यों की पूर्ति पर ऐसा कुठाराघात है जिसे इतिहास कभी नहीं माफ करेगा।

यह भारत की बिडम्बना ही है कि अपने को पंथ–निरपेक्ष मानने वाले भारत के राजनेता और मीडिया के लोग हिन्दू का प्रश्न आते ही क्रूरता का व्यवहार करने लग जाते है। पाकिस्तान द्वारा हिन्दुओ पर हो रही ज्यादतियों पर संसद में सभी दलों के नेताओ ने एक सुर में पाकिस्तान की आलोचना तो की जिस पर भारत के विदेश मंत्री ने सदन को यह कहकर धीरज बंधाया कि वे इस मुद्दे पर पाकिस्तान से बात करेंगे परन्तु पाकिस्तान से बात करना अथवा संयुक्त राष्ट्र में इस मामले को उठाना तो दूर यूंपीए सरकार ने इस मसले को ही ठन्डे बसते में डाल दिया और आज तक एक भी शब्द नहीं कहा। अगर यही मसला भारत में अथवा किसी अन्य देशो में रह रहे मुसलमानों के साथ हुआ होता तो अब तक का परिदृश्य ही कुछ और होता. खिलाफत दृ आन्दोलन और अलास्का को हम उदाहरण स्वरुप मान सकते है. पाकिस्तान में न सही किन्तु भारत की संसद, सरकार , मीडिया के लोगो में तो हिन्दू का बहुल्य ही है लेकिन अगर हम अपवादों को छोड़ दे तो शायद ही कभी देखने–सुनने का ऐसा सुनहरा अवसर आया हो कि राजनेताओ, पत्रकारों अथवा कोई हिन्दू संगठनो के समूह ने भारत सरकार पर हिन्दुओ के हितो की रक्षा के लिए दबाव बनाया हो. एक तरफ जहा नेपाल सरकार द्वारा वहा घोषित हिन्दू–राष्ट्र के खात्मे पर सभी पंथ–निरपेक्षियों ने उत्सव मनाया तो वही भूटान से निष्कासित हिन्दुओ के विषय पर चूप्पी साध ली. इनसे कोकराझार और कश्मीर के हिन्दुओ के हितो की बात करना तो दूर उन पर हो रहे अत्याचारों तक की बात करना ही व्यर्थ है, तो क्या यह मान लिया जाय कि भारत के साथ दृ साथ पाकिस्तान, बांग्लादेश, भूटान इत्यादि देशो में रहने वाले हिन्दू अपने हिन्दू होने की सजा भुगत रहे है और उनके लिए मानवाधिकार की बात करना मात्र एक छलावा है।

पाकिस्तान में हिन्दू स्त्रियों का बलात्कार और भारत की चुप्पी के मायने?

डॉ. पुरुषोत्तम मीणा 'निरंकुश'

अमेरिका जो संसार के किसी भी देश के किसी भी कौने में अपनी दादागिरी करने पहुँच जाता है, उसे ये घटनाएँ क्यों नहीं दिख रही हैं? यह भी अपने आप में एक बड़ा सवाल है और भारत को विश्व मंचों पर इस बात को अमेरिका के खिलाफ उपयोग में लाना चाहिये।

मीडिया के मार्फत जो खबरें आ रही हैं, उनसे पता चलता है कि इतनी भयानक स्थितियॉ पैदा हो चुकी हैं कि पाकिस्तान के हिन्दू परिवार भारत में शरण प्राप्त करने को विवश हो गये हैं। जिस पर भारत के इस्लामिक धर्मगुरुओं की ओर से रमजान के पवित्र महिने में चुप्पी साध लेना किस बात का संकेत देती है?

भारत और पाकिस्तान अपनी आजादी का जश्ध्न मानने में मशगूल हैं और पाकिस्तान में आये दिन हिन्दू लड़कियों और औरतों के साथ हिन्दू होने के कारण ''बलात्कार'' किये जाने की खबरें, मीडिया के माध्यम से लगातार आती रहती हैं। जिस पर भारत सरकार की ओर से ऐसा कोई ठोस कूटनीतिक कदम सार्वजनिक रूप से नहीं उठाया गया है, जिससे देश के आम इंसाफ पसन्द लोगों को और विशेषकर हिन्दुओं को इस बात का अहसास हो सके कि भारत सरकार को विदेशों में बसने वाले हिन्दुओं की भी चिन्ता है! यह अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण और दुरूखद है, जिसकी तीखे शब्दों कड़ी निन्दा और भर्त्सना की जानी चाहिये। हम सभी भारतीय और पाकिस्तानी लोग इस बात को ठीक से जानते हैं कि विभाजन के समय दोनों राष्ट्रों के तत्कालीन कर्ताधर्ताओं की ओर से सार्वजनिक रूप से गारण्टी दी गयी थी कि विभाजन के बाद अपने-अपने नागरिकों के बीच सरकारों द्वारा धर्म के आधार पर या अल्पसंख्यक या बहुसंख्यक के आधार पर किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जायेगा और सभी को अपने-अपने दीन-ईमान-धर्म का अनुसरण और पालन करने की सम्पूर्ण आजादी होगी। सभी को बिना किसी भेदभाव के पूर्ण सुरक्षा प्राप्त होगी। इसके बावजूद दोनों ही देशों में अनेकों बार इस घोषणा का उल्लंघन किया गया है। वर्तमान में पाकिस्तान में हिन्दू धर्मानुयाईयों की बहन बेटियों की इज्जत के साथ केवल इस कारण कि वे हिन्दू हैं, सरेआम खिलवाड़ किया जाना 'इस्लाम' और 'हिन्दू' दोनों ही धर्मों के मूल सिद्धान्तों के विपरीत है। यही नहीं ये कुकृत्य संसार के सभी राष्ट्रों द्वारा स्वीकृत और सभी पर लागू मानव अधिकारों की संधियों के भी विपरीत है। सबसे बड़ी बात तो ये है कि इस प्रकार की घटनाएँ समाज में वैमनस्यता और दुराग्रहों को जन्म देती हैं। जिससे आहत धर्म के अन्य लोगों में भी स्वाभाविक तौर पर गुस्सा भड़कता है, जिसमें हिंसा और आगजनी जैसी घटनाएँ हो सकती हैं। कुछ घटिया किस्म के लोग ऐसे माहौल का लाभ उठाकर लोगों के बीच दूरियॉ पैदा करने के प्रयास करते हैं। ऐसे में अनेक निरीह प्राणी असमय काल के गाल में समा जाते हैं। जिसके चलते समाज में साम्प्रदायिक माहौल खराब होता है। लोगों के बीच धार्मिक दीवारें खड़ी हो जाती हैं! मीडिया के मार्फत जो खबरें आ रही हैं, उनसे पता चलता है कि इतनी भयानक स्थितियॉ पैदा हो चुकी हैं कि पाकिस्तान के हिन्दू परिवार भारत में शरण प्राप्त करने को विवश हो गये हैं। जिस पर भारत के इस्लामिक धर्मगुरुओं की ओर से रमजान के पवित्र महिने में चुप्पी साध लेना किस बात का संकेत देती है? मॉ-बहन किसी की भी हों, उनकी रक्षा करना केवल दीन, धर्म या मजहब को मानने वालों के लिये ही नहीं, बल्कि इंसानियत में आस्था रखने वाले हर एक इंसान का फर्ज है! जिस पर किसी की भी चुप्पी का अर्थ है, इंसानियत को नंगा होते हुए देखकर भी चुप्पी साध लेना या उनके इंसानी जेहन का मर जाना। मानवीय संवेदनशीलता का समाप्त हो जाना और नापाक एवं वहशी ताकतों के समाने घुटने टेकना और उनको खुला समर्थन देना। फिर से इस बात को दौहराना जरूरी है कि भारत सरकार का ये नैतिक, मानवीय, धार्मिक, राष्ट्रीय, संवैधानिक और वैश्घविक फर्ज है कि वह अपने स्तर पर कूटनीतिक प्रयासों के जरिये पाकिस्तान की सरकार को कड़ा सन्देश दे कि मानवता का मजाक उड़ाने वाले और हिन्दू बहन-बेटियों के साथ कुकर्म करने वाले नापाक

भारत सरकार का ये नैतिक, मानवीय, धार्मिक, राष्ट्रीय, संवैधानिक और वैश्विक फर्ज है कि वह अपने स्तर पर कूटनीतिक प्रयासों के जरिये पाकिस्तान की सरकार को कड़ा सन्देश दे कि मानवता का मजाक उड़ाने वाले और हिन्दू बहन-बेटियों के साथ कुकर्म करने वाले नापाक वहशी दरिन्दों को कड़ी सजा दी जाये और पाकिस्तान के सभी हिन्दुओं को सम्पूर्ण सुरक्षा मुहैया करवायी जाये, अन्यथा इससे जहॉ एक ओर दोनों देशों के रिश्तों में खटाश तो आयेगी ही, साथ ही साथ भारत इस प्रकार के मामलों को चुपचाप नहीं देखेगा।

वहशी दरिन्दों को कड़ी सजा दी जाये और पाकिस्तान के सभी हिन्दुओं को सम्पूर्ण सुरक्षा मुहैया करवायी जाये, अन्यथा इससे जहॉ एक ओर दोनों देशों के रिश्तों में खटाश तो आयेगी ही, साथ ही साथ भारत इस प्रकार के मामलों को चुपचाप नहीं देखेगा। अमेरिका जो संसार के किसी भी देश के किसी भी कौने में अपनी दादागिरी करने पहुँच जाता है, उसे ये घटनाएँ क्यों नहीं दिख रही हैं? यह भी अपने आप में एक बड़ा सवाल है और भारत को विश्व मंचों पर इस बात को अमेरिका के खिलाफ उपयोग में लाना चाहिये। इस सबके साथ-साथ भारत के आम लोगों को भी जहॉ एक ओर तो संयम और सौहार्द को बनाये रखना होगा, वहीं दूसरी ओर भारत सरकार को इस मामले में तत्काल हस्तक्षेप करने के लिये मजबूर करना होगा! प्रतिपक्षी दलों को भी एकजुट होकर इस मामले को संसद में पूरी ताकत के साथ उठाना चाहिये। भारत की महिला संगठनों और मानव अधिकारों के लिये काम करने वाले संगठनों तथा लोगों को भी इस मामले में संज्ञान लेकर इसे उचित मंचों पर उठाना चाहिये। लेकिन इस बात की सावधानी बरती जाने की भी अत्यधिक जरूरत है कि इस मामले को भारत के कुछ दुष्ट प्रकृति के साम्प्रदायिक लोग वोट बैंक बनाने के लिये इस्तेमाल नहीं करने पायें।

असम व बोडो समस्या एक ऐतिहासिक परिपेक्ष में

❑ राजीव उपाध्याय

असम पर अहोम राजाओं का राज होता था . सारायी घाट के युद्ध में लाचित बर्फुकन के चातुर्य से जीतने के बाद वे मुगल राज से बच गये . असम कि समस्याएं सन १८२६ में अंग्रेजों के असम जीतने से शुरू हुयी .१. सन १८३७ में चाय कि खेती शुरू करने के लिए थोड़े से मध्य भारत से बंधुआ मजदूर लाए गये . परन्तु १९०५ के बंगाल विभाजन के बाद अंग्रेजों ने काफी अंग्रेजी पढ़े बंगाली बुला लिए जो उनकी राज चलने में मदद करते थे . असमी बंगालियों को पसंद नहीं करते थे क्योंकि वे अंग्रेजों के करीब थे। परन्तु फिर भी उनकी संख्या बहुत सीमित थी. २. १९०६ में मुसलिम लीग बनने से उसके नेता नवाब सलीम उल्लाह खान ने मुसलमानों को असम में बसने के लिए प्रेरित करना शुरू कर दिया जिससे ब्रह्मपुत्र घाटी का फायदा मुसलमानों को मिले, नवाबी शासन में यह संभव नहीं था। ३. सी . एस . मुलन ने १९३१ कि जन्गाडना के बाद इसका बहुत कठोर शब्दों में लालचियों द्वारा जमीन लूटने कि भर्त्सना की और इसे असम कि संस्कृति का विनाश बताया.. ४. १९३७ में नए मुख्यमंत्रि गोपी नाथ बोरदोलई ने आव्रजन पर रोक लगाने कि कोशिश कि .परन्तु शीघ्र ही कांग्रेस ने अपने मुख्या मंत्रियों को इस्तीफा देने को कहा . नेताजी सुभाष ने स्थिति कि गंभीरता को समझते हुए गोपीनाथ को मुख्यमंत्रि बना रहने देने कि वकालत कि पर कांग्रेस नहीं मानी . ५. उसके बाद मुसलिम मुख्यमंत्रि सददुलाह ने बहुत मुसलमानों को बसाना शुरू कर दिया और एक लाख बीघा जमीन मुसलामानों को दे दी . असम के नेताओं जैसे बिष्णु राम मेढ़ी ने इसका तीव्र विरोध किया, पर ज्यादा अन्न उपजाने का बहाना कर के इसको खारिज कर दिया। ६. १९४२ में लोर्ड वावेल को जब सब समझ आया तो उन्होंने इसे अन्न बढाओ नहीं बल्कि मुसलमान बढाओ कार्यक्रम कह कर इसकी भर्त्सना की . ७. १९४६ में दिल्ली में मुसलिम लीग व् बाद में जिन्ना ने असम को पाकिस्तान में देने को कहा . पर कांग्रेस ने इसका विरोध किया . भाग्य से मुसलिम बाहुल्य सिलहट के पाकिस्तान में जाने से कुछ दिनों के लिए असम को कुछ रहत मिल गयी .परन्तु जिन्ना के शायद कहने पर उनके सचिव मैनुल हक चौधरी भारत में इस अजेंडे को पूरा करने के लिए रह गये . ८. १९६४ में असम के तब के मुख्यमंत्रि बी सी

चालिहा ने कानून बना कर इसे रोकने कि फिर कोशिश कि. परन्तु तब तक २० एम् एल ऐ मुसलिम थे जिन्होंने सरकार गिराने कि धमकी दे कर आव्रजन को बंद नहीं होने दिया . बाद में चौधरी केंद्र में मंत्रि बन गये और राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद के साथ मिल उन्होंने आव्रजन को खूब बढ़ावा दिया . ९. भुट्टो ने अपनी किताब में असम को विभाजन कि शेष आहुति करार दिया था . मुजीबुर रहमान भी असम को बंग्लादेश का जरूरी हिस्सा मानते थे .इस तरह श्रीमती गांधी के कार्यकाल में दस लाख मुसलमान असम में और आ गये . १०. बी के नेहरु , जो असम के गवर्नर रह चुके थे , उन्होंने इस वोट कि बुरी राजनीती के लिए कांग्रेस कि भर्त्सना कि. असम कि आबादी १९४७ में १९ लाख से बढ़ कर १९७२ व्में ३७ लाख हो गयी. ११. १९८२ में जब मंगलदोई सीट के मतदाता सूचि में बंगलादेशी मुसलमानों के नाम डालने कि कोशिश कि तो असम में व्यापक जन आंदोलन शुरू हो गया . १२. परन्तु मुसलिम परस्ती में सरकार तब भी १९७१ से पहले के आने वालों को नागरिकता देना चाह रही थी जब कि आंदोलनकारी १९५० से लिस्ट काटना चाह रहे थे . बहुत देर तक चलने के बाद आंदोलन कारियों से समझौते से घुसपैठियों कि धार पकड़ करने कि सहमति बनी . परन्तु कांग्रेस ने १९४७ का प्डक्ज एक्ट इस चालाकी से बनाया कि विदेशियों को विदेशी सिद्ध करने कि जिम्मेवारी पुलिस कि कर दी. संसार के किसी देश में ऐसा प्रावधान नहीं है. १३. मुसमानों ने मिल कर अगले पन्द्रह सालों में कुल दस हजार आदमियों को पहचानने दिया . २२ साल बाद सुपीम कोर्ट ने इस उलटे कानून को रद्द किया . परन्तु इस बीच एक करोड मुसलमान बंगलादेश से और आ गये और सुनियोजित ढंग से सारे देश में फैल गये . असम व् बंगाल पर विशेष कहर गिरा . १४. सी पी घ्म ने कांग्रेस कि तरह इन बांग्लादेशियों का वोट बैंक कि तरह इस्तेमाल किया और अब ममता बनर्जी कर रही हैं । १५. बोडो लोगों को एक समझौते के तहत कुछ विशेष अधिकार प्राप्त हैं।. बांग्लादेशियों ने जबरदस्ती जंगल कि जमीन घेर के मस्जिद बनानी शुरु कर दी और जमीन हथियाना सुरु कर दिया . बोडों का विरोध सही व स्वाभाविक था । गोधरा कि तरह लड़ाई कि पहल मुसलमानों ने कि और खामियाजा सब को भुगतना पड़ रहा है . पर बोडों कि यह क्षणिक जीत है। मुसलामानों के पास बहुत हथियार है और वे कहीं और हमला कर गृह युद्ध शुरू कर देंगे . मुंबई में हाल के दंगों में पुलिस ने हमलावर मुसलामानों को ही बचाया चाहे इस के लिए खुद मर गयी। १६. सरकार को इन बदली परिस्थितियों में पंजाब सी गलती नहीं दोहरानी चाहिए . असम को बचाना हमारा पहला कर्त्तव्य होना चाहिए. बांग्लादेशियों को देश से निकलना ही इस समस्या का ठीक व न्याय पूर्ण इलाज है।

Newspaper Association of India 20th Annual Conference and National Achievement Award-2012

❑ **NAI DESK**

Newspapers Association of India (NAI) which represents the press at the grassroots level in almost all languages and territories of the country, and which constitutes the core of the press community in this country since its inception in 1993, has endeavored to bring the Small and Medium newspapers and media organization from the length and breadth of our great country together under the ambit of one platform . Until now we were successful in bringing together approximately 7000 such entities as active members under our umbrella. These newspapers are published in Hindi, English and other vernacular languages. Together they enjoy a reach to every nook and corner of the country. Our association actively takes up matters relating to the difficulties being faced by the publishers of these newspapers and also disseminates information useful to them from time to time.

The Conference would be focusing on the role that the regional newspapers play in the strengthening of this World's largest democracy. The emphasis would be on how the regional newspapers strengthen our democratic institutions with adherence to secular credentials. The strength of our democracy lies in the dissemination of information and these regional and vernacular language newspapers with their reach deep in the hinterland can and plays an effective role in the propagation of democratic ideas and advantages of people power.

"Nominations Open" News Papers Association of India Achievement Award-2012 and 20th Annul Conference

In the field of Journalism & Social Activities NAI Awards 2012, submissions open The News Papers Association of India invites journalists from developing India and the Pacific to submit published articles written, News, Videos, Photos, Social Activities, Agriculture or Rural Documenters' in January / 2012 to November / 2012 in connection with the 2012 annual Developing NAI Journalism Awards.

If you are interested in participating in the 2012 NAI Award program, please Send Your Port Folio. In C.D or You Can mail at: - naiindia@gmail.com

Statement of Terms and Conditions

Articles , News , Videos , Photos , Social Activities , Agriculture or Rural Documenters must be published And Telecast works and may have appeared in a regional newspaper, magazine, news wire service or website between 1 January 2012 to 31October 2012.

The judges shall not be bound to award a prize in any categories where they do not feel that the quality of entries merits it.

Submission deadline for NAI Awards 2012 is 7TH November 2012 , 6 pm Indian time.

If you need any help
Contact to
Office Secretary
News Papers Association of India
A/115 4th floor Vakil Chamber, Shakarpur
Vikas Marg , Delhi - 110092
011- 22058133 , 9971847045
Visit as:- naiindia.com
e-mail :- contact@naiindia.com
Suryabhan Singh Rajput
President (Editor – Nand Darshan Daily)
Mob- +91 9923199115
E-mail :- nanddarshandaily@gmail.com
Vipin Gaur
General Secretary (Editor In Chief – The Indian Majesty)
Mob.9810226962, 9718919456
E-mail :- nai.newsmedia@gmail.com

The Special Award is - Dr. M.R Gaur Lifetime Struggle & Achievement Award

In Electronic Media	Best Reporter
Best News Channel	Best Colam Writer
Best News Anchor	Best Photographer
Best Reporter	***Other Categories***
Best Cameraman	Best NAI State Committee
Best Editor	Best RTI Activist
In Print Media	Best Documentary For rural Development
Best News Agency	Best Radio Station
Best Magazine	Best Radio Jockey
Best Regional Newspaper (Daily , Weekly , Monthly , Fortnightly)	Best Social Worker
	Best Social NGO
Best Editor	Eminent Personalities

न्यूज़पेपर्स एसोसिएशन आफ इंडिया का 20वां राष्ट्रीय अधिवेशन

❑ एनएआई डेस्क

न्यूजपेपर्स एसोसिएशन आफ इंडिया के द्वारा पत्रकारिता व सामाजिक गतिविधियों के क्षेत्र मे, एनएआई पुरस्कार 2012 के लिए न्यूजपेपर्स एसोसिएशन आफ इंडिया का राष्ट्रीय सम्मलेन।

न्यूजपेपर्स एसोसिएशन आफ इंडिया भारत के पत्रकारों व समाज सेविओं को आमंत्रित करता है जिनका सहयोग भारत को विकासशील और प्रगतिशील बनाने मे रहा है और उन कार्यों को लेख , समाचारपत्र , वीडियो, तस्वीरों , सामाजिक गतिविधियों, द्वारा प्रकाशित व प्रसारित किया हो व कृषि व ग्रामीण विकास के कार्यों मे अपना सहयोग दिया हो हर साल की तरह इस साल भी न्यूजपेपर्स एसोसिएशन आफ इंडिया भारत के पत्रकारों व समाज सेवियों को पुरुस्कार से सम्मानित करेगा न्यूजपेपर्स एसोसिएशन आफ इंडिया १६ सालों से पत्रकारों की सेवा करने व उनकी समस्यों का समाधान करने पे लगी है पत्रकारिता के क्षेत्र मे कार्य करने वाले लोग देश की जनता की समस्या को सामने लाते है पर अपनी समस्या को किसी से नहीं बताते हैं उन पत्रकारों व समाज सेवियों को सलाम व सम्मान आप अपने प्रकाशित लिखा लेख, समाचार, वीडियो, तस्वीरें, सामाजिक गतिविधियों, कृषि व ग्रामीण विकास पर लघु फिल्म हमे भेजें यदि आप 2012 एनएआई पुरस्कार कार्यक्रम में भाग लेने में रुचि रखते हैं, तो कृपया अपने पोर्ट फोलियो भेजें. सीडी या मेल कर सकते हैं: –naiindia@gmail.com हमारी वेबसाइट मे सारी जानकारी www-naiindia.com

इस पुरस्कार कार्यक्रम मे देश के 24 राज्यों के संपादक, प्रकाशक, पत्रकार हिस्सा लेंगे समाचार पत्रों व समाचार जगत मे कार्य करने वाले संपादको, प्रकाशकों, पत्रकारों की समस्याओं पर चर्चा की जाएगी व उनका समाधान कैसे किया जाए सभी सवालों को सरकार के सामने रखा जाएगा व उन सभी समस्यों को हल करने की मांग की जाएगी देश के संविधान की मर्यादा के पालन को लेकर सामाजिक हितो की रास्ट्रीय आवाज बनाने मे लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ के रूप मे इस मीडिया शक्ति से बड़ा कोई भी लोकपाल वैकल्पिक जवाबदेही नहीं निभा पा रहा है जिसे जनतंत्र की आवाज कहा जा सके। समाचार पत्रों के प्रतिनिधि समाज प्रहरियों की भूमिका ने है देश की आजादी की लड़ाई से लेकर आजतक भारत को विश्व सचेतक बनाने की मंजिल को आसन रास्ता दिया है। मीडिया ने राजनैतिक कुशलता प्रोत्साहित करने मे कई सहायिक कदम उठाए है। इस समारोह मे मीडिया के हको की आवाज को उठाने के साथ साथ मीडिया प्रहरिओं की सुरक्षा के लिए राज्यों की नीतिओं के बदलाव के लिए भी जोर दिया जाएगा।

भारत की शान विजय कुमार ने पिस्टल शूटिंग में रजत पदक जीता

❑ **कविता बमौत्रा**

निशानेबाज मे विजय कुमार ने लंदन ओलांपिक 2012 में भारत के लिए 25 मीटर रेपडि फायर पिस्टल के मुकाबले में 2 पदक जीते जो की एक कास्य और एक सील्वर पदक जीते। 26 वर्शीय विजय कुमार ने अंतिम दौर में 30 रन बनाकर उन्होंने रजत पदक अपने नाम कर लिया। भारतीय खिलाड़ी विजय कुमार का मुकाबला चीन के डिंग फेंग के साथ हुआ जिसने 27 कस स्कोर के साथ कास्य पदक जीता और क्यूबा ल्यूरिस ने 34 अंको के साथ सोने का पदक जीत कर पहला स्थान प्राप्त किया। विजय कुमार हिमाचल के रहने वाले हैं उन्होने रजत पदक जीत कर भारत की शान तो बढाई साथ ही साथ उन्होने अपने माता पिता का सर शान से ऊँचा कर दिया और साथ ही अपनी जन्म भूमि हिमाचल का नाम भी।

विजय कुमार ने दिल्ली 2010 के राष्ट्रमण्डल खेल में एक सोने चांदी सहित अन्य प्रमुख खेल प्रतियोगिताओ में अपने नाम पदक कर चूके हैं। विजय कुमार ने 2006 के राष्ट्रमंण्डल खेलो में 25 मीटर रेपिड फायर पिस्टल में 2 स्वर्ण पदक अपने देश के नाम कर लिए थे।

अलका सिन्हा के कहानी–संग्रह 'मुझसे कैसा नेह' का लोकार्पण

❑ नरेश शांडिल्य, महासचिव, अक्षरम

राजधानी के हिन्दी भवन में अलका सिन्हा के कहानी–संग्रह 'मुझसे कैसा नेह' का लोकार्पण किताबघर प्रकाशन एवं अक्षरम् के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे मूर्धन्य आलोचक प्रभाकर श्रोत्रिय ने भाषा की सघनता को कीमती बताते हुए अलका की 'चौराहा' और 'मोल्डिंग सिस्टम' कहानियों को उद्धृत किया। उन्होंने कहा कि ये रचनाएं जीवन के नए–नए अर्थ तलाशती हैं और यह रचनाकार की महत्वपूर्ण विशेषता है। मुख्य अतिथि के रूप में प्रख्यात कथाकार चित्रा मुद्गल ने कहा कि इन कहानियों को पढ़ते हुए लगता है कि हम महादेवी वर्मा के कहानी–जगत में पहुंच गए हैं जहां वे अपने समाज की चिंता करती हैं। भारत की गरीबी को विदेशों में बेचकर बड़े–बड़े अवार्ड्स लाने के बारे में राज्य–सभा सदस्य नरगिस दत्त द्वारा सत्यजीत रे पर लगाए गए आक्षेप का संदर्भ लेते हुए चित्रा मुद्गल ने कहा कि अलका सिन्हा की कहानी 'चांदनी चौक की जबानी' इस तथ्य को झुठलाती हुई एक ग्लोबल कहानी है। सुप्रसिद्ध कथाकार राजी सेठ ने कहा कि अलका के पास भौतिक परिदृश्य के पार जाने की क्षमता है जो स्थूल और सूक्ष्म, जड़ और चेतन, दृश्य और अदृश्य के बीच सहज संवाद बना पाने में दक्ष है। उन्होंने कहा कि मुझे 'अपूर्णा' कहानी विचलित करने वाली और 'हरदम साथ डॉट कॉम' अपने प्रभाव के प्रसार में थरथरा देने वाली लगी। वरिष्ठ कथाकार और आलोचक महेश दर्पण ने कहा कि ये

कहानियां किसी फैशन के तहत नहीं लिखी गई हैं, इसलिए पठनीय हैं। कोई कहानी हमेशा के लिए याद रह जाती है जैसे 'तुम्हारे लिए चॉकलेट, बेबी' कहानी पढ़कर बाबा भारती की याद आती है। 'फिर आओगी न' कहानी बगैर शोर मचाए स्त्री–विमर्श की कहानी है। 'चौराहा' कहानी को उन्होंने उन कहानियों के विरोध की कहानी बताई जो बताती हैं कि पिता की हत्या करके ही नौकरी पाई जा सकती है। हिन्दी अकादमी, दिल्ली के उपाध्यक्ष एवं प्रख्यात भाषा विज्ञानी डॉ विमलेश कांति वर्मा ने चुटीले अंदाज में कहा कि हिंदी के लेखक ऐसा लिखते हैं कि उनको खुद नहीं पता कि वे क्या लिख रहे हैं। अलका जी की यह विशेषता है कि जो वह कहती हैं, उसे समझती हैं और जो पढ़ता है, वह भी उसे समझता है। ऐसी कहानी मुझे अच्छी लगती है। युवा आलोचक दिनेश कुमार ने इन कहानियों को खोए हुए मनुष्य की तलाश की कहानियां बताते हुए कहा कि इनमें एंटी–क्लाइमेक्स के शिल्प को मजबूती से साधा गया है। संग्रह की कहानी 'चौराहा' पर संकल्प जोशी द्वारा एकल अभिनय की विशेष प्रस्तुति को भरपूर सराहना मिली। कार्यक्रम का संचालन चर्चित लेखक अनिल जोशी और धन्यवाद ज्ञापन जाने–माने कवि नरेश शांडिल्य ने किया। खचाखच भरे सभागार में गणमान्य लेखकों, कलाकारों और बुद्धिजीवियों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

German support for innovative technologies by micro, small and medium enterprises

The Small Industries Development Bank of India (SIDBI) and the German Government's Development Bank KfW, signed agreements on Monday, 03 September, for financial assistance totaling EURO 54 million (approximately Rs 375 crore) to support the development and diffusion of innovative technologies by micro, small and medium enterprises (MSMEs) operating in designated clean technology sectors. The agreements were signed by Mr. S. Muhnot, Chairman and Managing Director SIDBI and Mr Oskar von Maltzan, Director, KfW Office, India at the Ministry of Finance in the presence of Joint Secretary Mr. Rajesh Khullar and the Head of the Development Section of the German Embassy Mr. Bernd Dunnzlaff.

The SIDBI Innovation Finance Programme – which consists of credit lines amounting to EURO 53 million (including a Reduced Interest Loan for EUR 45 million and a Financial Cooperation Loan of EURO 8 million) and an accompanying technical assistance grant of EURO 1 million – will specifically target MSMEs developing new energy efficiency, renewable energy, waste management, pollution control and other clean technologies.

One of the major factors inhibiting the growth of such MSMEs is the lack of growth capital to fund investments in marketing, brand building, distribution networks, technical know-how, software purchase, investment in energy efficiency and quality improvement equipments, research and development. As these investments often involve intangible assets, debt financing is rarely forthcoming while deal sizes are typically too small to be attractive to typical venture capital companies. The Innovation Finance Programme addresses these bottlenecks by enabling SIDBI to offer tailormade risk capital products to nurture and promote cleantech innovations by MSMEs. "Risk capital is an integral element of any entrepreneurial ecosystem that aims to foster innovation and growth," said Mr. Oskar von Maltzan. "By focusing on quasi-equity and subordinate debt type solutions for MSMEs operating in the cleantech space, the Innovation Finance Programme will both help bridge critical financing gaps as well as meet the mounting challenge of climate change and environmental degradation." The agreements signed today buttress SIDBI's pioneering role as a risk capital provider for MSMEs, further deepening the longstanding cooperation between SIDBI and KfW.

India would not have been the India of Today without the PSUs says Mr. Praful Patel at the 2nd AIMA PSU Summit

New Delhi, September 4, 2012: The All India Management Association organised its second annual PSU conference with the theme 'Grow, Transform and Sustain- The Mantra for Indian PSUs' here in the capital today.In India, Public Sector Enterprises play a very significant role in the process of nation building and towards fuelling its economic growth. In recent years, the increasing globalization and the integration of Indian economy with global markets has thrown up new opportunities and challenges to the Public Sector Undertakings. The preferential treatment given to PSUs by the state as a customer is on the decline and they now have to compete with other private organizations on equal terms. The PSU Summit provided an ideal platform to deliberate on some of the critical issues being faced by the Public Sector Enterprises in India today that act as a hindrance to their growth and discuss transformation strategies.

Stressing the need for Public Sector Undertakings to challenge themselves and break out of the rut, Mr. Arup Roy Choudhury, Chairman, SCOPE and Chairman & Managing Director, NTPC Limited said, "PSUs have exhibited a robust performance since the 90s with manifold increase in the net growth and profits. They have been instrumental in building infrastructure for other segments of the economy. Public Sector Enterprises have been the backbone of socio-economic growth and are at the forefront of Corporate Governance. Their contribution to a balanced regional growth is also of major significance."

Emphasis was laid on the established examples of already successful PSUs during the welcome address by Mr. Rajiv Vastupal, President, AIMA & Chairman & Managing Director, Rajiv Petrochemicals Pvt.Ltd. who said, "PSUs have played a vital role in industrialisation. Their role now becomes more vital as India is fast becoming a global economic powerhouse. It is thus time for PSU's to support India's integration into the world environment and facilitate a global support chain for sustainable development. AIMA aims to bring to light these issues by virtue of this interesting summit and a line of eminent dignitaries and their views." Mr.O.P Rawat, Secretary, Department of Public Enterprises, Government of India, added, "PSUs facilitate an environment for growth, transformation and a sustainable future. For them to compete globally it is essential to focus on their assets, brand power and human resources to grow stronger."

The role of leadership to guide PSUs through the challenges of an ever-expanding economy was addressed at length in the first session by luminaries such as Mr. RS Sharma, Former Chairman & Managing Director, ONGC, Mr. RK Bahugana, Managing Director, RailTel Corporation of India Ltd., Mr. S.K Roongta, Chairman & Managing Director, National Seeds Corporation Limited and Mr. Akhil Bansal, Chief Operating Officer, KPMG India.

Mr. R. S Sharma, Former Chairman & Managing Director, ONGC Limited was the Session Chairman. He said, "PSUs are extremely rich in talent and it is essential for leaders to capitalise on this talent to strategise the way forward to build excellence and brace competition."

Giving the views of the private sector Mr. Akhil Bansal, Chief Operating Officer, KPMG India added, "The sheer volume of PSUs in the GDP is so significant and no private sector can meet that. They are the market leaders in many sectors and are no longer restricted to just public utilities. However, what is needed is a balance between strategic and commercial role. Also, retaining talent and extracting vale out of the resources should be an integral part of the HR agenda of the PSUs. More collaboration between the PSUs and the private sector will accelerate the development process. This should not just be driven by government initiatives like PPP but also a conscious effort on part of the Public Sector to collaborate with the private sector maybe by outsourcing a function that is not their strength." The second session revolved around the issue of Transforming Governance and Building Resilient Organizations. The expert panel included Mr. S K Roongta, Managing Director, Vedanta Aluminium, Mr. Arun Rath, Chairman & Professor, Centre for Corporate Governance & Social Responsibility, International Management Institute and Mr.

The last session of the day witnessed Organisation heads and experts discuss and debate the importance of Human Resources in the development of Businesses and the need to retain talent. The session was chaired by Dr. A.K Balyan, Managing Director & CEO, Petronet LNG Ltd. and the other speakers were Mr. B.B Pattanaik, Managing Director, Central Warehousing Corporation and Ms. Shalini Pillay, Partner, People Change Management Advisory Services, KPMG India.

Expressing his views Managing Director & CEO, Petronet LNG Ltd, Dr. A.K. Balyan, said,"talent is the most import aspect of any organisation which drives growth. Organistions, particularly knowledge-driven oganisations, must identify, recruit, nurture and retain talent to perform well and excel."

जय जवान, जय किसान नारे का पतन

❑ अखिलेष

जब भी हम उस किसाना की बात करते हैं जो हमारे लिए दाल रोटी से लेकर दूध दही जैसी बुनयादी चीजें पैदा करता है तो हमारे जेहन में बस एक ही अक्स उभरता है जो लाचार है और अपने बजूद के लिए जिन्दगी भर संघर्ष करता है। जय जवान जय किसान का नारा लगाने वाले भारत में न तो जवानों के ही हालात ठीक नजर आते हैं और न ही किसानों के। अगर हालातों की ही बात करें तो भारत का एकाध ही ऐसा महक़मा होगा जहाँ बेहतर हालात देखने को मिलेंगे। दिन रात बदलते मौसम के मिजाज़ से किसान तो पूरी तरह से रूबरू हैं ही लेकिन ना जाने सरकार ऐसे कौन से कमरे में आँख मूंद कर बेठी है जहाँ ना कड़ी धुप की जलन पहुंचती है और ना ही किसानों के घर के मातम की आवाज़, आवाज तो आज किसी की नही पहुंचती चाहे देश के सरोकार से जुडी आवाज़ हो चाहे गरीब की पुकार हो बस आवाज़े तो तब बुलंद होती हैं जब राजनीत चमकाने का मौका हो और वोट बैंक का फ़ायदा। किसान यूँ तो हमेशा वक्त की मार झेलता है, कभी सूखा तो कभी बाढ और कभी, आर्थिक तंगी, और रही सही कसर सरकार का ढुलमुल रवैया पूरी कर देता है। अगर इन सब मारो को झेलते हुए किसान अपनी कड़ी मेहनत से फसल उगा भी ले, तो सरकार की बदइंतजामी के चलते उसे मुनासिव दाम तो क्या उसकी लागत तक नही मिल पाती। भारत एक कृषि प्रधान देश है और कृषि का उत्पादन इसकी अर्थव्यवस्था को भारी मात्रा में प्रभावित करता है लेकिन सरकार के आलाकमान योजना बनाते समय कृषि को हमेशा हासिये पर ही रखते हैं और अगर ग़लती से योजना बन भी जाये तो ग्रामीण इलाको में पहुचते पहुचते इतनी कमज़ोर हो जाती है कि किसान उसका फ़ायदा ही नहीं उठा पाते। किसानो के हालात कितने अच्छे होंगे और कितने खराब ये बात भारत में आने वाला मानसून तय करता है। लेकिन साथ ही ये कहना भी ग़लत नहीं होगा की भारत की सरकार भी कहीं न कहीं किसानो के बद्तर और बेहतर हालातों के लिए ज़िम्मेदार है। भारत एक कृषि प्रधान देश है ये बात हम बचपन से सुनते आ रहे इस अलाप की ज़मीनी हकीकत ये है कि भारत के कृषि प्रधान होने पर भी कृषि को न तो संसद में आवाज़ मिलती है और ना ही देश के अलाकमानों को इसमें कोई समस्या मिलती है।भारत की लगभग 70 फीसदी आबादी कृषि पर अपने जीवन जीती है और भारत की अर्थ व्यवस्था को कृषि बड़ी मात्रा में प्रभावित भी करती है साथ ही संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन की 2010 की रिपोर्ट की माने तो भारत पूरी दुनिया में सबसे ज्यादा ताजा फल पैदा करने वाला देश है। कृषि की साँसों पर जीने वाले देश में कृषि की ही साँसे अटकी नज़र आती है, संसद से लेकर सड़कों तक मुद्दों की एक झड़ी लगी हुई है लेकिन जिस मुद्दे से हम सांस लेते है वो ही संसद और सड़क की भीड़ से नदारद है कृषि और किसान की बदतर हालत का अंदाजा इस बात से ही लगाया जा सकता है कि आज भी कृषि और किसान उसी चोराहे पर आंसू बहाते दीखते है जिस पर आजादी से पहले दिखते थे, गुलामी आज भी उनकी तरक्की के पैरों की बेड़ी बनी हुई है।

Publishing on 10th of every month
RNI No. 62500/95
REGD. No. DL (E)-01/5149/2012-2014
LICENCE TO POST WITHOUT
PRE-PAYMENT No. U(C)223/12-14

To,

If undelivered, Please return to:
न्यूज़ पेपर्स एसोसिएशन
ऑफ इण्डिया
POST BOX 9235, NEW DELHI-110 092

यदि आप लेख, रचना, समाचार, विचार प्रेषित करना चाहते हैं तो आप अपने अप्रकाशित लेख निम्न पते पर भेजें।

आपको *NAI* का यह अंक कैसा लगा, इस बारे में अपने सुझाव हमें निम्न पते पर भेजें।

एन. ए. आई.
A-115, Vakil Chambers, Top Floor,
Shakarpur, Delhi-110092, Ph.: 011-22058133

Editorial Board

Founder	Late Dr. M. R. Gaur
Editor Publisher-Printer	Vipin Gaur
Counsultant Editor:	Dr. Smita Mishra
Managing Editor:	Dilip Kumar
Legal Advisors:	Nikhat Anjum Malik
Advocate Delhi Highcourt	Rajesh Sharma
	Adv. P. Yadav
Office Secretary	Kavita Bamotra

- Bureau Chief -

Guwahati:	Runu Hazarika
Mumbai:	Mr. Dinesh K. Mishra
Bangalore:	Mr. M. K. Jain
Jaipur :	Mr. Banwar Singh Ranawat
Chennai:	Mr. P.C.R. Suresh
M.P. & C.G.	Mr. O. P. Jain
Kerela	Mr. Suvarna Kumar
Goa	Dr. Vivek Gaitonde

गजल

मुझे अब भी याद हैं वो गुज़रा ज़माना
वो मुझे देखकर तेरा बेख़ौफ मुस्कराना
वो परदे के पीछे से तेरा छुप-छुप कर देखना
वो माँ से मिलने के बहाने सामने आ जाना।।

वो मेरी याद में तेरा रात दिन तड़पना
वो तेरा बंद कमरे छुप-छुप कर आँसू बहाना
वो मेरे आते ही चेहरे पर कलियों का खिलना
मुझे अब भी याद है वो गुजरा जमाना

वो तेरा दूर से निगाहें मिलाना
वो पास आकर हया से निगाहे झुकाना
वो अदा से तेरा मुस्करा कर चले जाना
मुझे अब भी याद है वो गुज़रा जमाना

वो तेरा जान कर जुल्फों को लहराना
वो तेरा बिन दुपट्टे के सामने आ जाना
वो तेरा बहाने से पास आकर बैठ जाना
मुझे अब भी याद है वो गुजरा जमाना

मुझे याद है मुहब्बत का वो हर इक फसाना
मुझे अब भी याद है वो गुज़रा जमाना
हसरत है इस बेताब धड़कते दिल की
तू मुझको लौटा दे वो गुजरा जमाना।

अब तो तेरे दीद को ये आँखे तरसती है
तेरे हुस्न की खुशबू को ये सांसे भटकती है
अब तो रातें तेरी यादों में यूँ ही कटती हैं
तू मुझको लौंटा दे वो गुजरा जमाना।
तेरे लबों पे क्यूँ खामोशी सी बस्ती है
अब तू मुझे क्यूँ पराई सी लगती है
तू किसी और के ख्यालों में क्यूँ खोयी सी रहती हैं
तू मुझको लौटा दे वो गुजरा जमाना

❑ मोदस्सिर इलाहाबादी
email: modas_1980mohammed@yahoo.co.in

प्रथम पृष्ठ का शेष

एन.ए.आई द्वारा देहदानियों

विभाग में गठित देहदान समिति एवं इस कार्य में संलग्न स्वयंसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधियों को सूचित किया जा सकता है। देहदान करने की घोषणा करने वाले रामकिशन शर्मा ने कहा कि मृत्यु के बाद आत्मा के निकल जाने से शेष रहे शरीर का कोई महत्व नहीं है। इस शरीर का श्रेष्ठ उपयोग किसी अन्य की जान बचाने अथवा अनुसंधान के लिए ही किया जा सकता है। संस्था के राष्ट्रीय महासचिव विपिन गौड़ ने कहा देह दान एक बहुत ही बड़ा दान है जिससे की कई नई जिंदगियां मिल सकती है और

देहदान करने वाले को अमर शांति मिलेगी देश मे चिकित्सा विभाग अच्छी ऊँचाइयों को छुएगा और पुरे देश मे न्यूज पेपर एसोसिएशन ऑफ इण्डिया की कोशिश रहेगी की पुरे देश मे उनलोगों को समर्थन और सम्मान मिलेगा जो देहदान करेंगे।

न्यूज पेपर एसोसिएशन ऑफ इण्डिया की राजस्थान इकाई के महासचिव मनमोहन सिंह बग्गा, जयपुर जिलाध्यक्ष अमन वर्मा सहित एनएआई के सभी पदाधिकारियों ने अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि एसोसिएशन रक्तदान, नेत्रदान एवं देहदान को प्रोत्साहित करने के लिये विशेष प्रयास कर रही है। इस अवसर पर स्थानीय पार्षद मंजू चौधरी सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण मौजूद थे।

साथ ही साथ चिकित्सा मंत्रा्री से एनएआई महासचिव की भेंट 18 अगस्त चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री श्री ए.ए.ख़ान (दुर्रूमियां) से शनिवार को मध्यान्ह स्वास्थ्य भवन में न्यूज पेपर्स एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के सचिव एवं दिल्ली से प्रकाशित साप्ताहिक समाचार–पत्र कन्ट्री एण्ड पॉलिटिक्स के सम्पादक श्री विपिन गौड़ ने भेंट की। श्री ख़ान ने न्यूज पेपर एसोसिएशन ऑफ इण्डिया की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी ली एवं अपनी एसोसिएशन की प्रगति की कामना की। इस अवसर पर न्यूज पेपर एसोसिएशन ऑफ इण्डिया की राजस्थान इकाई के महासचिव श्री मनमोहन सिंह बग्गा एवं श्री भंवर सिंह राणावत भी मौजूद थे।

Printed, Published by Vipin Gaur on behalf of News papers Association of India, Printed at Mayank Offset Process 794/95 Guru Ramdas Nagar Ext. Laxmi Nagar Delhi-92 and Published from J-51, DLF Dilshad Delhi-95, Editor: Gayatri Gaur. All disputes settled in Delhi Court only.